

BFC PUBLICATIONS PVT. LTD.

Personal Details

Author Name	KAMLESH KUMAR H SHUKLA
Father Name	HARIHARNATH SHUKLA
Date of Birth	1974-08-09
Contact No	8108188488
Alternate contact no.	9112229937
e-mail ID	kamleshwaranand@gmail.com
Nominee Name	PRAGYA SHUKLA
Correspondence Address :	003, PRATHAMESH ASTHA, SAMARTH NAGAR
Landmark	OPP. SAMARTH VIDYALAY
City	BADLAPUR EAST
State	MAHARASHTRA
Pin Code	421503
Country	India

BANK DETAILS

Account holder's name	KAMLESH H SHUKLA
Account No.	013510110001658
Bank Name	BANK OF INDIA

Branch	BHANDUP WEST
IFSC Code	BKID0000135
Pan No.	BEFPS7581N

Book Details

Book Title	Shree Guru Rahasyam
How would you like your name to appear on book?	ब्रह्मस्वरूप पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी कमलेश्वरानंद जी
Manuscript Language	Hindi
Book Genre	Others
Number of images (If any)	15
Manuscript Status	Completed
Book Size	5"x8"

Cover details

Synopsis

"श्री गुरु रहस्यम्"- 'स्कंद पुराण' में भगवान सदाशिव ने देवी उमा को श्री गुरु के संबंध में जो भी स्पष्ट दो टूक अपना अनुभव दिया उसका मूर्त रूप ही श्री गुरु रहस्यम्(गुरु-गीता) है। इसमें भगवान सदाशिव ने बताया कि चाहे अन्य किसी देवी-देवता की कतिनी भी पूजा, पाठ एवं साधनाएँ की जाएँ, वह अपने आप में न्यून एवं तुच्छ है क्योंकि हे देवी उमा ! समस्त साधनाओं में सिद्धि एवं जीवन में पूर्णता केवल श्री गुरु ही दे सकते हैं.....

अतएव जीवन की आपाधापी, व्यस्तता, दीनता एवं दरदिरता को पूर्ण रूप से समाप्त करने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, जीवन के समस्त रोगों को समाप्त करने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, पूर्ण पुरुषत्व, पूर्ण यौवन, अद्वितीय एवं श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने की वधि है श्री गुरु रहस्यम्, अतीव सुंदर, आकर्षण एवं सम्मोहक बनने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, समस्त सुख-सौभाग्य, धन-यश-मान, पद-प्रतिष्ठा एवं वैभव प्राप्त का उपाय है श्री गुरु रहस्यम्, अपने घर में लक्ष्मी की अजस्त्र वर्षा कराने का उपाय है श्री गुरु रहस्यम्, समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को प्राप्त करने की वधि है श्री गुरु रहस्यम्, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्री, कणाद, पुलस्त्य एवं शंकराचार्य बनने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, वेदों, उपनिषदों, पुराणों एवं शास्त्रों की तरफ से उपहार है श्री गुरु रहस्यम्.....

क्योंकि भगवान सदाशिव कहते हैं कि इसका एक-एक श्लोक केवल श्लोक ही नहीं बल्कि अपने आप में मंत्र है। अतः जो भी व्यक्ति, साधक एवं शिष्य इसके कुछ श्लोकों का यदनित्य पाठ करता है तो निश्चय ही वह अपनी मल-मूत्र भरी जड़िगी से ऊपर ऊठकर साधना एवं सिद्धियों को हस्तगत कर लेता है तथा जीवन के चतुर्थ पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त करता ही है.....

अतः प्रत्येक व्यक्ति को निश्चिंति ही इस श्री गुरु रहस्यम्(गुरु गीता) का पाठ या श्रवण करना ही चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति, साधक एवं शिष्य को पूज्य गुरुदेव द्वारा वरिचि अद्वितीय, अनमोल एवं अनुपम कृत श्री गुरु रहस्यम् को अवश्य ही प्राप्त कर अपने पूजा घर में रखनी चाहिए। अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें और अपने जीवन में सौभाग्य स्थापित करें.....

Blurb

"श्री गुरु रहस्यम्"- 'स्कंद पुराण' में भगवान सदाशिव ने देवी उमा को श्री गुरु के संबंध में जो भी स्पष्ट दो टूक अपना अनुभव दिया उसका मूर्त रूप ही श्री गुरु रहस्यम्(गुरु-गीता) है। इसमें भगवान सदाशिव ने बताया कि चाहे अन्य किसी देवी-देवता की कतिनी भी पूजा, पाठ एवं साधनाएँ की जाएँ, वह अपने आप में न्यून एवं तुच्छ है क्योंकि हे देवी उमा ! समस्त साधनाओं में सिद्धि एवं जीवन में पूर्णता केवल श्री गुरु ही दे सकते हैं.....

अतएव जीवन की आपाधापी, व्यस्तता, दीनता एवं दरदिरता को पूर्ण रूप से समाप्त करने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, जीवन के समस्त रोगों को समाप्त करने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, पूर्ण पुरुषत्व, पूर्ण यौवन, अद्वितीय एवं श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने की वधि है श्री गुरु रहस्यम्, अतीव सुंदर, आकर्षण एवं सम्मोहक बनने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, समस्त सुख-सौभाग्य, धन-यश-मान, पद-प्रतिष्ठा एवं वैभव प्राप्त का उपाय है श्री गुरु रहस्यम्, अपने घर में लक्ष्मी की अजस्त्र वर्षा कराने का उपाय है श्री गुरु रहस्यम्, समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को प्राप्त करने की वधि है श्री गुरु रहस्यम्, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्री, कणाद, पुलस्त्य एवं शंकराचार्य बनने की प्रक्रिया है श्री गुरु रहस्यम्, वेदों, उपनिषदों, पुराणों एवं शास्त्रों की तरफ से उपहार है श्री गुरु रहस्यम्.....

क्योंकि भगवान सदाशिव कहते हैं कि इसका एक-एक श्लोक केवल श्लोक ही नहीं बल्कि अपने आप में मंत्र है। अतः जो भी व्यक्ति, साधक एवं शिष्य इसके कुछ श्लोकों का यदनित्य पाठ करता है तो निश्चय ही वह अपनी मल-मूत्र भरी जड़िगी से ऊपर ऊठकर साधना एवं सिद्धियों को हस्तगत कर लेता है तथा जीवन के चतुर्थ पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त करता ही है.....

अतः प्रत्येक व्यक्ति को निश्चिंति ही इस श्री गुरु रहस्यम्(गुरु गीता) का पाठ या श्रवण करना ही चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति, साधक एवं शिष्य को पूज्य गुरुदेव द्वारा वरिचि अद्वितीय, अनमोल एवं अनुपम कृत श्री गुरु रहस्यम् को अवश्य ही प्राप्त कर अपने पूजा घर में रखनी चाहिए। अपनी प्रतिआज ही प्राप्त करें और अपने जीवन में सौभाग्य स्थापित करें.....

सामान्य परिचय :

हम सबके प्रातः स्मरणीय, मंत्र-तंत्र-यंत्र वेत्ता, विविध गोपनीय रहस्यों के मर्मज्ञ और समस्त समस्याओं पर विजय शरी का वरदान प्रदान करने वाले पूज्य शरी गुरुदेव, गुरु गोत्रीय, उच्च कुलीन सरयूपाणा बिराहमण हैं, जनिका शुभ नाम "पं. कमलेश शुक्ला", पति शरी हरहर नाथ शुक्ला जी तथा माता शरीमती जयरानी शुक्ला जी हैं, "सद्गुरु" प्रिय सन्यस्त नाम "शरी स्वामी कमलेश्वरानंद जी" हैं, जो गुरुत्व की चेतना से आप्लावित हैं, जनिकी शक्ति एवं क्षमता असीम में समाहित हो असीम और अनन्त बन गई है.....

द्वितीय परिचय :-

प्रभु का पृथ्वी पर आगमन हुए समय विशेष में किसी ना किसी स्वरूप में होता आया है, ऐसे ही परम पूज्य गुरुदेव "स्वामी कमलेश्वरानंद जी" द्वितीय आभा को धारण कर कमल स्वरूप में इस पृथ्वी पर एक समय विशेष में अवतरित हुए, इसे हम काल सीमा में बाँधना नहीं चाहते, क्योंकि वो हर पल, हर क्षण अपने इस स्वरूप में जन्मता रहा, पृथ्वी पर आगमन, प्रकृति अपने आपे हर्षित और उल्लसित हुई, पर साधारण जीवात्माएँ ना समझ पाई, यहाँ तक की माता-पति में भी वो दृष्टि नहीं मिली कि वो लोग पहचान पाए पर एहसास हर पल होता रहा कि कुछ तो ये अलग है। एक साधारण से परिवार में इनका जन्म हुआ पर सोच बचपन से असाधारण, यही भावना अन्य लोगों को सोचने पर मजबूर करती। द्वितीयता, पवित्रता, निश्चलता, निर्मलता का समावेश बचपन से इनके व्यक्तित्व में,

जीवों पर दया करना, शान्त एकान्तवास पसंद करना, परिवार में रहते हुए परिवार को जीते हुए परमात्मा कौन है? क्या है? कैसे मिल सकता है? मनुष्य शरीर में होने के कारण अपने द्वारा हुई किसी भी तरह की गलती के लिए प्रभु से प्रार्थना, पश्चाताप की अग्नि में स्वयं को जला प्रेममय जीवन प्राप्त कर प्रेम की कामना करना, ईश्वर से बातें करना, यह भावना रखना की प्रभु सुनता है, बचपन से ही मानव कल्याण करने की सोच, प्रभु कार्य करके जीवन गतिशील करने की कामना, ये सब स्व की बातें स्व से और स्व में समाहित हो हृदय की पुकार, ऐसी हुई की एक और बार जन्म इसी शरीर में स्वामी निखिलेश्वरानंद जी द्वारा (परम पूज्य गुरुदेव शरी स्वामी कमलेश्वरानंद जी के परम आराध्य हैं, कया लीला है प्रभु की, कसि-कसि तरह कसि-कसि रातों में कैसे-

